सलई
(*Boswellia serrata* Roxb.)

आयुर्वेदिक नाम	सलाकी
हिन्दी नाम	सलई
यूनानी नाम	कुंदुर
अंग्रजी नाम	Indian Frankincense, Indian Olibanum
व्यापारिक नाम	सलई गुगल
वैज्ञानिक नाम	*Boswellia serrata*
उपयोगी भाग	गम-ओलियो रेजिन

औषधीय उपयोग

सलई में कीटाणुनाशक गुण होते है, जिस कारण इसका उपयोग दस्त, पेचिश, बबासीर, अल्सर, आदि रोगो मे होता है। इसके गम आलियो रेजिन मे सूजन नाशक और गठियावात रोधक प्रकृति होने के कारण इसका उपयोग जोड़ो के दर्द मे भी होता है।

आकारिकीय लक्षण

सलई मध्यम आकार का वृक्ष होता है, जिसकी ऊँचाई लगभग 18 मी. एवं गोलाई 2.4 मी. तक होती है। छाल हरी-भूरी, पीली-लाल, मोटी-चिकनी होती है। पत्तियॉ 30 से 35 सें. मी. लम्बी, विपरीत क्रम मे लगी होती है। फूल छोटे सफेद अक्ष पर लगे होते है। पंखुड़ियॉ लंबी एवं अंडाकार होती है। फल तिकोनाकार 12 मि.मी. लंबे तीन अक्षो मे विभक्त होते है।

वितरण

यह वृक्ष भारत मे पश्चिम हिमालय, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, ओडिसा, बिहार,झारखंड, तेलंगाना, आंध्रप्रदेश एवं उत्तर पश्चिम के शुष्क वन क्षेत्रो मे बहुतायत मे पाया जाता है।

मृदा एवं जलवायु

सलई शुष्क एवं गर्म पहाड़ी क्षेत्रो में जहाँ औसत वर्षा 50 से 125 से.मी. होती है, पाया जाता है। यह लाल, भुरभुरी, पहाड़ी मृदा में पाया जाता है।

प्रवर्धन

सलई का प्रवर्धन बीज एवं कटिंग द्वारा आसानी से किया जा सकता है। बीजों का अंकुरण 25-30 प्रतिशत होता है। लगभग दो माह पुराने नवोद्भिद् पौधे जिनकी ऊचाई 15 - 20 से.मी. होती है, प्रत्यारोपण के लिये उपयुक्त होते है। 1-2 से.मी. मोटी कलम 26 प्रतिशत तक सफल होती है,लेकिन प्रत्यारोपण के दौरान इनका जीवंत प्रतिशत अत्यंत अल्प है।

कृषि तकनीक

नर्सरी तकनीक

पौध तैयारी एवं प्रत्यारोपण

मई-जून में उच्च गुणवत्ता के वृक्षो से बीजों को प्राप्त कर जुलाई-अगस्त मे बुआई कर लगभग 2 माह पुराने नवोद्भिद् पादपो को 5 मी. x 5 मी. की दुरी पर प्रत्यारोपित करना चाहिये। इस तरह 1 हेक्टेयर मे लगभग 400 पौधे लगाये जा सकते है।

पौध रोपण एवं क्षेत्र तैयारी

अप्रेल माह मे खेत की गहरी जुताई कर भूमि को खरपतवार मुक्त कर प्रति हेक्टेयर 20 टन FYM मिलाना चाहिये। इस बात का ध्यान रखे कि खाद और मिट्टी अच्छी तरह मिल जाये।

सहरोपण (मिश्रित खेती)

प्रारंभिक 5-6 वर्षो मे अदरक, हल्दी, ग्वारपाठा आदि की मिश्रित खेती की जा सकती है।

सिंचाई

15 दिनो के अंतराल मे सिंचाई नितांत आवश्यक है, खासकर दिसंबर से जून माह के दौरान।

खरपतवार नियंत्रण

प्रारंभिक वर्षो मे निदाई गुड़ाई के साथ खरपतवार का नियंत्रण किया जाना चाहिये।

रोग एवं कीट प्रबंधन

सामान्यतया इस प्रजाति मे किसी भी प्रकार का विशिष्ट रोग नहीं पाया जाता है।

विदोहन प्रबंधन

फसल परिपक्वता एवं विदोहन

इसमे फूल जनवरी-अप्रेल माह मे आते है। मई–जून मे इसका बीज परिपक्व होता है। 8-10 वर्षो के बाद ही वृक्ष से गम-ओलियो-रेजिन एवं छाल प्राप्त की जा सकती है।

रासायनिक संगठन

इसका तेल तारपीन के तेल के समान होता है। गम-ओलियो-रेजिन से बोसवेलिक अम्ल प्राप्त किया जाता है एवं छाल मे ओराविनोज, गेलेक्टोज एव जाइलोज पाया जाता है।

ई–चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगधित औषधियाँ, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई–चरक (ई–मंच) का उपयोग करे।
- यह ऐप एंड्रोइड मोबाइल, प्ले–स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है।

औषधीय पौधो की कृषि तकनीक, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन संबंधी अधिक जानकारी के लिये संपर्क करे।

क्षेत्रीय संचालक

क्षेत्रीय–सह–सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, पोलीपाथर, जबलपुर–482008 (म.प्र.)

संपर्क: 0761–2665540, 9300481678, 9424658622 फैक्स: 0761–2661304

ई–मेल: rcfc_sfri817@rediffmail.com, sdfri@rediffmail.com

वेब: http://www.rcfccentral.org

सलई

(*Boswellia serrata* Roxb.)

क्षेत्रीय-सह-सुविधा केन्द्र, मध्य क्षेत्र

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

2019